कठिन नही है डगर अभिभावक की

----लीना मेहेंदले----

हर घर में एक ऐसा समय आता है जब हम अभिभावक की भूमिका में आ जाते हैं और सोच में पड जाते हैं कि बच्चों का व्यक्तित्व निखारने के लिए क्या करें।

कई सौ वर्ष पूर्व महर्षि चरक ने चरक संहिता में लिखा है कि व्यक्ति बनने में चार बातों का योगदान है। पहली उसके आनुवंशिक गुण जो वह अपने पूर्वजों से लेकर आता है। आज की भाषा में कहें तो उसके जीन्स। दूसरी बात है उसके परिवेश, माता पिता, परिवार और समाज से मिलने वाले संस्कार। तीसरा वह ज्ञान जो उसने पाठशाला में, पुस्तकों और गुरु से सीखा। चौथी है घुमक्कडी -- उसने घूम घूम कर जो देखा और सीखा। हरेक बात का योगदान पचीस प्रतिशत है।

अभिभावक की सोच या आकुलता सही है। मित्रमंडली में यह चर्चा हमेशा होती है कि बच्ची या बच्चे का लालन पालन कैसे करें, उसकी पढाई को कैसे सँवारें और वॅल्यू सिस्टम में क्या डालें। इस संबंध में मेरे आजमाए कुछ खास खास गुर हैं। ये गुर खोजने और आजमाने में मेरी नौकरी और विचारधारा तथा मेरे अपने जीवन मूल्योंका प्रभाव रहा है फिर भी मुझे लगता है कि ये गुर हर परिस्थिति में अपनाए जा सकते हैं।

मेरी नौकरी की वजह से बच्चों के लिए बहुत अधिक समय निकालना मेरे लिए संभव नही था। कलेक्टर की पोस्ट पर तैनात अधिकारी के लिए समय का हिसाब करना कुछ मुश्किल ही होता है। उसे सुबह शाम रात किसी भी समय टूर व अन्य कामों के लिए जाना पड सकता है। इसलिए नियमित समय या सविस्तृत प्लानिंग संभव नही था। मुझे कुछ ऐसे तरीके ढूँढने पडे जिसमें कमसे कम परिश्रम व समय में ही अधिक फल मिल सके। इसके लिए चाहिए निरंतरतासे निभाए जाने वाले कुछ खास खास नियम। लेकिन वे भी कम हों तभी निभाना संभव है। इन्हें मैंने क्रिटिकल प्लानिंग का नाम दिया है।

इसीसे मैंने बच्चों को यही सिखाया कि जीवन के अधिकतर काम बहुत थोडेसे प्लानिंग के सहारे निपटाने चाहिए। दस पंद्रह प्रतिशत काम क्रिटिकल प्लानिंग के साथ हों और उन मुद्दों पर कोई भी कमी नही रखनी चाहिए। बाकी कामों के लिए वही मनःपूतं समाचरेत् वाला नियम चलेगा।

ऐसे क्रिटिकल प्लानिंग वाले कामों में सर्वप्रमुख बात थी हर रोज की नियमित एकत्रित पढाई। इसमें गणित के पहाडे, स्कूली पुस्तकों की कविताएँ, कुछ संस्कृत के श्लोक, बीजगणित के नियम, ज्यामिती व व्याकरण के सूत्र, विज्ञान के सिद्धांत और व्याख्याएँ, तथा इतिहास भूगोल के कुछ तथ्य शामिल थे। इनका चयन बच्चों की जरूरत के अनुरूप बदलता गया और समय मेरी टूरिंग के अनुरूप। जब मैं सांगली जिले में कलेक्टर थी और स्कूटर पर बेटे को शिशु वर्ग में छोडने जाती तो उन पंद्रह मिनटों में सौ तक की गिनती हिंदी, मराठी व अंगरेजी भाषा में तथा कुछ कविताएँ दोहरा लेती। आज अब वो स्टीयरिंग व्हील पर होता है और में साथ वाली सीट पर और हम एक दूसरे से दुनियाँ की नई घटनाओंकी बात करते हैं तो उन दिनोंको भी याद करते हैं।

बच्चे बडे होते गए तो अगले पाठ भी पढाई की रुटीन में शामिल होते गए। उनके गणित के पाठ के लिए हमें उनके कॉन्वेंट स्कूल के साथ बेइमानी करनी पडी। स्कूल का आग्रह था कि बच्चों को कोई भी विषय मराठी में न पढाया जाय। गणित के पहाडे तो हरगिज नही। अब मराठी या हिन्दी में अंकों की गिनती एक शब्द की होती है जब कि अंग्रेजी में दो या तीन
शब्दों की। जैसे चौंसठ को कहना पडेगा सिक्सटी फोर या पैंतीसासे को कहना पडेगा वन हंड्रेड ऍन्ड थर्टी फाईव्ह। हिन्दी में कहेंगे नौ पांचे पैंतालिस पर अंग्रेजी में कहना पडेगा नाइन फाइव्हज आर फोर्टी फाईव्ह। अर्थात् समय और परिश्रम दोनोंका खर्चा अधिक।

सो तय हुआ कि पहाडे तो मराठी से ही याद किए जाएंगे। कॉन्वेंट स्कूलों में रोजाना पहाडे गिनवाने का रिवाज नही होता। हाँ, लिखवाए जाते हैं जो मन ही मन मराठी में दोहराकर लिखे जा सकते हैं। यदि कभी टीचर ने अकेले को उठा कर पहाडे सुनाने को कहा तो जैसा बन पडे कह देना।हो सकता है थोडी डाँट खानी पडे। और फायदा ? तो फायदे की बात थी स्पीड -- तेजी। गुणा भाग के सवाल मेरे बच्चे

फटाफट कर सकते थे क्यों कि लम्बे लम्बे शब्दों का समय बच जाता था।

चौथी कक्षा की स्कॉलरशीप परीक्षा हो या नॅशनल टॅलेंट सर्च या बारहवीं के बाद आय् आय् टी, या स्नातक के बाद बँकिंग परीक्षा हो, यानी जहाँ कहीं गणित के गुणा भाग का सामना करना है वहाँ वहाँ पहाडे याद हों व कम शब्दों सहित याद हों -- अर्थात् हिन्दी में -- तो बहुत फायदा होता है। मेरे बच्चोकी देखादेखी उनसे सलाह लेने वाले कई बच्चोंने यह तरीका अपनाया।

गणित सिखाने के लिए कई अन्य गुर उपयोगी हैं। बचपन में माँ ने मुझे पहाडे याद करवाने का अलग तरीका अपनाया था। छोटे छोटे कामों के बीच पूछ लेती -- चार साते? और बिना चार एके चार, चार दुने आठ किए सीधे तत्काल उत्तर देना पडता - अठाइस। इसमें बडा मजा आता था खासकर जब मैं देखती कि परीक्षा में कितनी तेजी से मैंने गणित का पेपर खतम कर लिया है।

मेरे बच्चोके लिए मैंने दीवार पर नौ खानोंवाले कुछ चौकोर चिपका दिए थे। उनमें तत्काल गुणा के लिए आँकडे लिख दिए थे। दस के पहाडे तक सारे गुणाकार ऐसे सात चौकोरों में आ जाते हैं।

३ x ६	८ x ९	९ x ४
५ x २	७ x ३	८ x ७
२ x ९	४ x ३	५ x ६

हर दिन ऐसे एक चौकोर के नौ सवाल करते चलो तो बच्चे और अभिभावक भी आसानी से माहिर हो जाते हैं। हाल ही में मेरी बहन के लडके ने इंजिनियरिंग खतम करने के बाद जीआरई और टॉफेल की परीक्षा में गणित की तैयारी के लिए यही तरीका अपनाया। मुझसे बोला -- मौसी, तू बचपन में मुझे यह याद करवाना चाहती थी, तब तो मैं टाल गया था पर अब कर रहा हूँ, अब तुम्हारे बाकी सारे गुर भी बता दो।

बचपन में मैंने क्या क्या रटा था। उसमें पव्वे का पहाडा भी था -- एक पव्वा पव्वा, दो पव्वा आधा, तीन पव्वा पौना, चार पव्वा एक। यूँ सौ पव्वा पचीस तक। इसी तरह आधे का, पौने का, डेढ और अढाई का भी। मैंने भी बच्चोको चालीस तक ये सारे पढवा दिए थे। साथ ही पचीस तक वर्गफल और दस तक घनफल भी पढवाए थे। अर्थात् दो दुनी चार, तीन तिये नौ, चार चोके सोलह, से चलकर पचीस पचीसे छःसौ पचीस और एक एके एक एके एक, दो दुनी चार दुनी आठ, तीन तिये नौ तिये सताइस से चलकर दस दसे सौ दसे हजार तक। एक सीरीज भी याद करवाई थी -- एक, तीन, छः, दस, पंद्रह, इक्कीस, अठाइस, छत्तीस, पैंतालिस, पचपन। ये एक से दस तक अंकोंके जोड की सीरीज है।

एक से सौ के बीच पचीस अविभाज्य अंक पडते हैं और इनकी पहचान के कई फायदे हैं। इसलिए दो, तीन, पाँच, सात, ग्यारह, तेरह, सत्रह, उन्नीस से चलकर तिरासी, नवासी, सतानबे तक सारे अविभाज्य अंकोंकी एक लयबद्ध कविता बनाकर हमलोग गाते थे। याद रखने के लिए कविता, लय, ताल, धुन आदि बडे उपयोगी हैं। इसीलिए हमारे यहाँ श्लोक पाठ, मंत्रपाठ और छंदोबद्ध कविताका इतना महत्व है। इसीलिए बच्चोंको स्कूली पुस्तकों की कई कविताएँ याद करवाई थीं। यह सब अंग्रेजी करना प्रायः असंभव था। और मराठी या हिंदी में करना सरल।

बस एक गहरी बात बीच में थी। स्कूल में काफी स्टिक्टली कहा गया था कि घर पर भी कोई बच्चा किसी विषय की पढाई अंग्रेजी के सिवा दूसरी भाषा में नही करेगा। हमारी शाम की चर्चा में हमने बच्चोंसे अकसर एक मित्र के नाते और उन्हें विश्वास दिलाकर बातें की हैं। उन्हें समझाया कि नियम क्यों होते हैं,

एक नियमबद्ध समाज कैसे ज्यादा तेजी से विकास करता है और नियमों का पालन क्यों आवश्यक है। साथ ही यह बताया कि नियम आदमी के लिए है न कि आदमी नियम के लिए। इसलिए हर नियम के पीछे कोई सिद्धांत होता है और हमें उस सिद्धांत को परखना है। यदि वह समाज की भलाई के लिए है, तो उसके प्रति हमें श्रद्धा रखनी पडेगी, लेकिन उसे कुरेद कर देखो, परखो, आंख मूँद कर मत मानो -- चाहे हम माँ बाप ही क्यों न कह रहे हों। अर्थात् जब यह सिखाया कि स्कूल की बात को आँख मूँदकर मत मानो तो यह भी सिखाना पडा कि हमारी बात को भी आँख मूँदकर मत मानो। आगे जब वे बडे हुए तब यह भी सिखाना पडा कि सेना या पुलिस में आँख मूँदकर सिनियर का आदेश पालन करना क्यों और कितना आवश्यक है। तो बात केवल पहाडों या गणित तक नही रही, वह दार्शनिकता तक जा पहुँची।

उन दिनों न जाने कितनी स्कूली कविताएँ और कितनी साथ साथ की गई पढाई थी। उन्हें आज भी याद करते हैं तो उल्लास, आनंद व प्रेरणा के झरने बन जाते हैं। जैसे -- सुभाषबाबू पर लिखी पंक्तियाँ -- आजानुबाहू ऊँची करके वे बोले रक्त मुझे देना, इसके बदले में भारत की आजादी तुम मुझसे लेना। या अंग्रेजी की टेल मी नॉट इन मोर्नफल नंबर्स लाइफ इज बट ऍन एम्पटी ड्रीम। या प्रसिद्ध मराठी कविता अरे, विश्वकर्मा है श्रम का पुजारी जहाँ जूझते हाथ वहाँ है हरी। व्याकरण के लिए भी ऐसे ही कुछ गुर अपनाए थे उनकी चर्चा फिर कभी।

आज जब बच्चे अपने कामों में मगन हैं, कुछ काल से विदेशवासी भी हैं, तो इस एकत्रित पढाई की यादें हमारे बंधन को मजबूत रखने में सहायक हो रही हैं।

--- लीना मेहेंदले, १५ सुनीति, जगन्नाथ भोंसले मार्ग, मुंबई ४०००२१